|   | श्रवरोत्तन ग्रेसेन्द्रं गतयोजनम् क्रितं। ग्रोभितं शिखरिखनैः सुप्रवद्वी हिरएसयैः।                   | PIRE II |
|---|--|---------|
|   | काञ्चनीभिः शिलाभिञ्च गुहाभिञ्च विभूषितं। समाकुलं सूर्यानिभैः सालैकालेञ्च भाखरः।                    |         |
|   | सुग्रभेजातरूपेस श्रीमद्भिस्ववेदिनैः। षष्टिं गिरिसहस्राणि तत्रामौ संन्यवेशयत्।                      |         |
|   | मेर्प्रतिमरूपाणि वपुषा प्रभया च र। सरसजलधारश्च पर्वतं मेर्पत्रिमं।                                 | \$ 580K |
|   | पुण्यतीर्थगुणोपेतं भगवान् सन्यवेशयत्। षष्टियोजनविस्तारं तावदेव समुच्छितं।                          |         |
|   | त्रात्मरूपोपमं तत्र वारा हं नाम नामतः। निवेशयामास विभृहिंयं वैदूर्यपर्वतं।                         |         |
|   | राजताः काञ्चनाञ्चव यत्र दिव्याः शिलीचयाः । तत्रैव चक्रमदृशं चक्रवन्तं महाचर्णं ।                   |         |
|   | यहस्रकूटं विपुलं भगवान् संन्यवेशयत्। श्रङ्कप्रतिमरूपञ्च राजतं पर्व्यतोत्तमं।                       |         |
|   | सितद्रमणताकीण प्रद्धं नाचा न्यवेशयत्। सुवर्णरत्नसंभूतं पारिजातं सहाद्रुसं।                         | 84880   |
|   | महतः पर्व्यतस्याये पुष्पद्वामं न्यवेशयत् । शुभामतिरमाद्वेव घृतधारेति विश्रुता ।                    |         |
|   | वराहः सरितं पुर्णा प्रती चामकरात् प्रभुः। प्रतीचा स विधि कला पर्वतं का श्वनी ज्ववं।                |         |
|   | गुणात्तरञ्चात्तरस्थां संन्यवेशयद्यतः। ततः सीम्यगिरिं सीम्यमन्तरीचप्रमाणतः।                         |         |
|   | रकाधातुप्रतिक्वमकरोद्गास्तरप्रभं। म च देशो विस्रव्यौऽपि तस्य भासा प्रकाशते।                        |         |
|   | तस्य सत्याऽधिकं भाति तपता रविणा यथा। सत्त्रासचणविज्ञेयस्तपतीव दिवाकरः।                             | १२४१म   |
|   | महस्रिखर्श्वेव नानातीर्थममाकुनं। चकार रत्नमंकीणं भूयोऽसं नाम पर्वतं। विकास महाराष्ट्र              |         |
|   | मनीहर्गणोपेतं मन्दरञ्चाचलोत्तमं। उद्दामपुष्पगन्धञ्च पर्वतं गन्धमादनं।                              |         |
|   | चकार तस्य प्रदक्षेषु सुवर्णरससमावा । जम्बू जाम्बनदमयीमत्यन्ताद्वृतदर्पनां । हिन्दिनी हिन्दिन       |         |
|   | गिरिं विशिखरश्चेव तथा पुष्करपर्वतं। गुभ्रं पाण्डरमेघाभं कैलासञ्च नगोत्तमं।                         |         |
|   | हिमवन्तञ्च ग्रेनेन्द्रं दिव्यधातुविभूषितं । निवेशयामाम हरिर्व्याराहीं तनुमास्थितः।                 | 86360   |
|   | नदीं सर्वगुणोपेतामुत्तरस्थां दिशि प्रभुः। मधुधारां स कतवान् दियां मुखश्रताकुलां।                   |         |
|   | सर्वे चैव चितिधराः सपचाः कामचारिणः। तदा कता भगवता विधावा परमेष्टिना ।।।।।।                         |         |
|   | स कला प्रविभागना प्रथिया लोकभावनः । देवासुराणामुत्पत्ती कतवान् बुद्धिमचयां। हिल्लि                 |         |
|   | दिचु चतजोपमाचयकार ग्रेलाम् विविधाभिरामान्। हिताय लोकस्य म लोकनायः पुष्पा नदीयापि जलोप              | ग्ढाः।  |
|   | द्रति श्रीमहाभारते खिलेषु हरिवंशे भविष्यपर्वणि वाराहे पञ्चविंगत्यधिकदिशताऽध्यायः॥ १२५॥             | _       |
| - | पायन उवाच ॥ जगत्स्रष्टुमना देवश्चिन्तयामास पूर्व्वतः । तस्य चिन्तयती वन्नान्निःस्तः पुरुषः क्रिल ॥ | 3 485K  |
|   | ततः स पुरुषो देवं किं करोमीत्युपस्थितः। प्रत्युवाच स्थितं छला देवदेवो अगत्पतिः।                    |         |
|   | विभजात्मानिमत्युक्ता गतोऽन्तर्द्वानमीश्वरः । श्रन्तर्हितस्य देवस्य मश्ररीरस्य भास्तरः ।            |         |
|   | प्रदोपसेव ग्रान्तस्य गतिसस्य न विद्यते। ततस्तेनेरितां वाणीं सोऽन्वचिन्तयत प्रभुः।                  |         |
|   | हिरण्यगर्भो भगवान् य एष च्छन्दमा स्तृतः। एकः प्रजापितः पूर्वमभवद्भवनाधिपः।                         |         |
|   | तदाप्रस्ति तसाची यज्ञभागी विधीयते।   | 16860   |
|   |  |         |